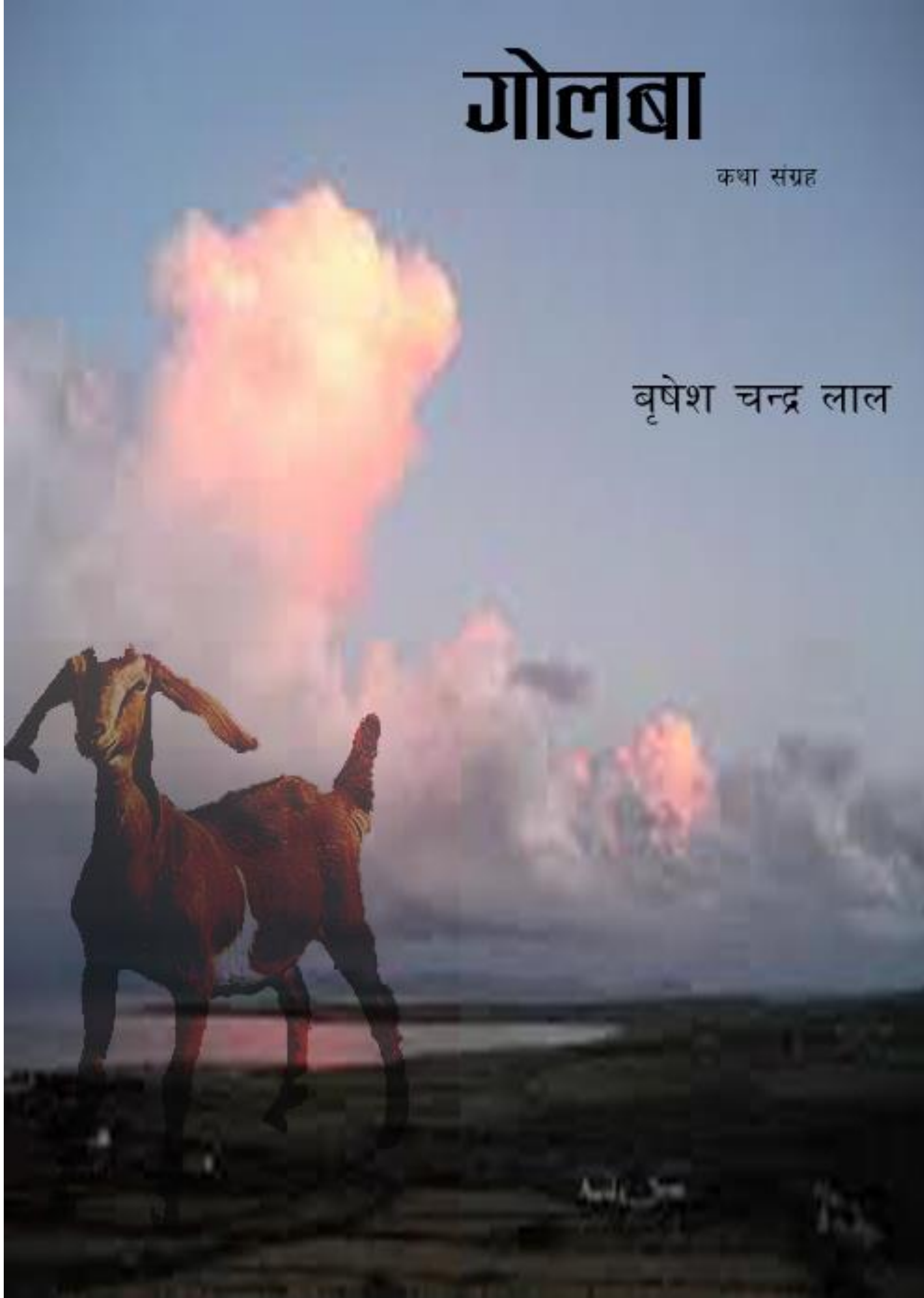

गोलबा
कथा संग्रह
बृषेश चन्द्र लाल

गोलबा

जहिया ओ जनमल, बड़कीमाइ धरतीपर खसहु नहि देलकैकि ! कहा"दोन माटि लागि जइतैक !! कहैत छैक जे पशु जाति गन्धेसँ चिन्हऐत छैक आ प्रायः तैं गोलबा सभसँ पहिने बड़कीमाइक गन्ध थाह पओलक आ लगले तखनहिं सोनी, मोनी आ बब्बूक । अपन माइ चितकबरीक गन्ध तँ ओ पेटहिंसँ पओने रहए ।

ओकरा कहियो नहि बुझएलैक जे ओ पशु अछि । ओ अपनाकेँ सोनी, मोनी आ बब्बूये जकाँ बड़कीमाइक सन्तान बुझैत रहल । बड़कीमाइ कहैतरहैति छलैकि जे गोलबा जनमल तँ ओकरा जखने पोछिपाछि कए ठाढ़ कएल गेलैक, चभकि–चभकि कए चितकबरीक थनसँ दूध पिबए लगलैक आ जखने पेट भरि गेलैक तँ दौड़ि कए ओकरि दुनू पएरक बीचमे साड़ीक कोंचामे गरदनि नुका लेलकैक । आ तहियासँ ई क्रम चलिते रहलैक । कुदि–फानि क' आएल आ बड़कीमाइक साड़ीक कोंचामे गरदनि पैसाकए उपर–नीचा करए लागल । बड़कीमाइ ओकरा कोरामे उठाकए ताबरतोड़ चुम्मा लेबए लगैकि आ गोलबा बड़कीमाइक स्नेहसँ मुग्ध भ' जाइक । संसारमे एहिसँ बेशी सुख ओकरा आओर कतहु कखनो नहि बुझएलैक । ओकरा बड़कीमाइ सभ दिन ममताक समुद्र लगैत रहलैक । कहाँ"दोन, सन्तानसँ प्रेम करएबलाकप्रति सन्तानक माय मुग्ध भ' जाइत छैक । ओकर माइ चितकबरी बड़कीमाइक सभ दिन आदर करैति रहलैकि । जखने बड़कीमाइ कहैकि — æचितकबरी आह ..आह ।" कि ओकर माइ चितकबरी चाहे कतबो दूर किएक ने रहौक, कानमे आवाज झरिते" चट बड़कीमाइ लग दौड़ि जाइक । आ बड़कीमाइ जेना–जेना इशारा करैकि चितकबरी चुप्पे मुड़ि गोंतने आदेशक पालन करैति जाइक । करौक कोना नहि ! भोरे–भोरे चितकबरीलेल घास, कोराइ आ कहियो काल दालिक

कुन्नीक ओरिआओन तँ वएह करैकि ने । रौद उगैक तँ बड़का रस्सीमे खुट्टीमे बान्हि ओकरा चरएलेल छोड़ि दैकि आ फेर दुपहरियामे चौरीमे ल' जाइकि । आरिक दुबि खाएमे कतेक आनन्द अबैत छैक से जे खाए सएह ने जानए !

तहिना करैक गोलबा । ओहो कहियो बड़कीमाइक आदेशक अवज्ञा नहि कएलक । हँ, चितकबरी स्थिरसँ अबैकि तँ ओ दौड़ैत–कुदैत–फुदकैत-फानैत ा कहियो काल जखन बड़कीमाइ कोनो काज–धन्धामे लागलि रहैति छलि अथवा ककरोसँ बतिआइतरहैति छलि तँ गोलबाकँ दुलारसँ धकेलि दैति छलैकि । मुदा, गोलबा ताधरि जान नहि छोड़ैत छलैक जाधरि बड़कीमाइ ओकरा उठाकए चुमि नहि लैति छलैकि । ... चितकबरी बड़कीमाइ आ गोलबाक सिनेह देखि मुग्ध रहैति छलि । ओ सभ दिन गोलबाकँ सिखबैतिरहलि जे जननाहरिसँ पोसनाहरि बड़की होइत छैक । आ ओ तैं" सभ दिन बड़कीमाइकँ अपन माइ चितकबरीसँ उपरे देखलकैक ।

सोनी आ मोनी तँ गोलबालेल अपन जाने न्योछारि देने छलि । नामो तँ ओकरेसभक देल रहैक ने । गोलबा जनमलैक तँ गोल, गुटमुटाएल आ लेपटाएल रहैक कहँ"दोन ! आ तँ ओकरा सोनी–मोनी 'गोलबा' कहि देलकैकि । ओकर नामाकरण अहिना भेल रहैक । पहिल बेरसँ ल' क' बहुत दिनधरि साँझु पहर, रातिमे आ सुति–उठिकए ओसभ ओकरा ओकर माइ चितकबरी लग ल' जाइक आ मुहँ पकड़िकए थन छुअबैकि । गोलबा मस्तँ दूध पिबए लागए । दिनोमे ओकरा मोनसँ कुद–फान कहाँ करए दैकि ओसभ ?! भरि दिन कोरामे लदने छी, लदने छी ! तहिया गोलबाकँ नीक नहि लगैक । मोन होइक जे छोड़ितए तँ कुद–फान करितए । मुदा, बादमे जखन ओ नम्हर भ' गेल तँ रहि–रहि कए मोन होइक जे कने सोनी–मोनी ओकरा कोरमे उठैबितैकि । सोनी–मोनी ओकरालेल सुतएलेल ओछाओन आ पहिरएलेल मिरजइक व्यवस्था कएने रहैकि । ओ मुति दैक तँ ओसभ बड्ड पिताइकि । रातिमे उठा–उठा कए पेसाप कराबए ल' जाइकि । गोलबाकँ तामस होइक । ओ की जानए गेलैक जे

ओकरा मुतक छैक । पेसाप लागल रहैक तँ ने ! जखन पेसाप लगैक ओ उठिकए गड़गड़ा दैक । ... सोनी–मोनी ओकरा अपने कोठरीमे सुतबैकि । बड़कीमाइ कए दिन कहलकैकि जे ओकरा चितकबरी लग पथियासँ झाँपि दौक । मुदा सोनी कहैकि जे कहुँ हुराड़ ल' जएतैक तखन ! आ ओसभ एक बरखधरि गोलबाकँ अपने कोठरीमे सुतबिते रहि गेलैकि । ओ नम्हर भेलैक तँ चट्टीमे गहुँमक भूस्सा भरि कए ओसभ ओछाओन बना देने रहैकि । आमक पात, दुबि, रामझिमनी आदि गोलबाक प्रिय भोजन रहैक । सोनी–मोनी चाउर भुजि ओहिमे करुतेल सानि क' खुअबैति छलैकि । गोलबा मस्तसँ खाए । कहैकि जे एहिसँ देह मोटाइत छैक । गोलबाकँ लोक मोट आ कसगर कहकि तँ बड्ड आनन्द अबैक । आ तैँ ओ चपर–चपर क' खाइक । गेरुका मेला लगलैक तँ सोनी–मोनी मेलासँ फुदना अनने रहैकि आ लाल, हरियर, कारी फुदना ओकरा गरमे बान्हि देने रहैकि । कहैकि जे लालसँ शक्ति बढ़तैक, हरियरसँ तन्दुरुस्ती आ कारी रहलापर ककरो नजरि नहि लगतैक ।

जेना–जेना ओ बढ़ैत गेल बब्बू ओकर दोस बनैत गेलैक । शुरु–शुरुमे ओ अपन दीदीसभक संगे" आगाँ–पाछाँ करैक । मुदा बादमे बब्बू ओकरापर बेशी ध्यान देबए लगलैक । जखन–तखन ओकर देह सेहारैक । कतहु, कनेको, कोनो दाग नहि लगबाक चाही । कनेको किछु लागि जाइक तँ ओ तुरत साफ करैक, देह मलैक आ पोछ–पाछ करैक । .... एकदिन पेठियासँ चारिगोट घुंघरुबला पट्टा किनि बब्बू ओकर गरमे सोनी–मोनीक फुदना संगहिं बान्हि देने रहैक । गोलबाकँ अपन गर कनेक भारी जकाँ लगलैक आ कुदए–फानएमे सेहो असहज भ' गेलैक । घुंघरुक आवाज कानमे झर दैक । कर्कश लगैक । गोलबा मुड़ी हिलाकए पट्टा निकालक प्रयत्न कएलक मुदा ओ निकलएबला थोड़े रहैक † उन्टे कान फाड़ए लगलैक । आब तँ दौड़एमे, पछिलका पएरपर ठाढ़ भ' क' गरदनि आँखि टेढ़ कए धाही मारएमे सेहो असोकर्य होमए लगलैक । मुदा करो की ? अपने निकालि सकैत नहि अछि ! भगवान बोली तँ

देने छथिन्ह मुदा सहज भाषा नहि जे ओ बब्बूकेँ सम्झाबए सकओ । अन्ततः अपन मन मसोसही पड़लैक ।

गोलबाक सिंघ जनमए लगलैक तँ माथपर कुरिऐनी ध' लेलकैक । ओ दाबा, खम्हा, आड़ि जहाँ पाबए माथ रगड़ए आ धाही मारए । । बब्बू आब ओकर माथकेँ पकड़िकए ठेलए लगलैक । ओकरा नीक लगैक । ओ छड़पिकए पछिला टांगपर ठाढ भ' बब्बूक हाथपर धाही मारए लागल । बब्बू आ गोलबाक नित्य कर्ममे इहो एकगोट अभ्यास जुड़ि गेलैक आ तकर बाद तँ ओ लड़ाका बनि गेल । दुपहरियामे बब्बू ओकरा गाछीमे घुरबए ल' जाइक आ ओतए ओकरा कएटासँ भिड़ए पड़ैक । बेशीकेँ ओ लगले भगा दैक मुदा एक दिन ओ हारही लागल छल । ओ तँ बब्बू जे चलाकीसँ ओकरा जीता देलकैक । ततेक जोड़स" ने जोश बढ़ओलकैक जे विपक्षी डरे भागि पड़ा गेलैक । मुदा, तीन दिनधरि ओकर सिंघलग माथ दुखाइते रहलैक ।

*   *   *

नहि जानि किएक एकाएक घरमे भीड़–भाड़ बढ़ि गेल रहैक । बड़कीमाइ एकदिन बुढ़ियादाईकेँ बजओने रहैकि आ तकर लगले दोसर दिन सभ दर–देआदसभक जमघट भेल रहैक । गोलबाकेँ घरक गतिविधि किछु विशेष तँ बुझएलैक मुदा ओ किछु बुझि नहि सकल । ओ देखि सकैत अछि । प्राकृतिक रुपसँ ओकरा अपनालेल आवश्यक विषयमे भगवान बुझक जतबे सामर्थ्य देने छथिन्ह ओ ततबे ने बुझत ! ओ अपन दिनचर्या क' सकैत अछि, अपनप्रतिक स्नेह आ बजारल चोटकेँ छू सकैत अछि, मुदा दोसरक छुपल भाव वा मनुखक भाषायी अभिव्यक्ति ओकर प्रकृति प्रदत्त सामर्थ्यसँ" फाजिलक विषय छैक । तैँ घरमे की चलिरहल रहैक ओ बुझि नहि सकल । हँ, गोलबाप्रति स्नेह किछु बेशीये बढ़ि गेल रहैक । ओना गोलबाकेँ केओ ऐंठ–का"ठ खाए नहि देलकैक । शुरुअेसँ कोनो घाओ–घौस नहि होउक, कतहु कटाउक नहि

तकर ख्याल सभकेओ रखैत अएलैक अछि । मुदा, एखन ओकर खान–पानपर पहिनेसँ किछु आओर विशेष ध्यान राखल जारहल छलैक । ... एक दिन पुरहित अएलखिन्ह । बड़ीकालधरि पतरा उनटअबैत रहलखिन्ह । जाएकाल बड़कीमाइ बहुते रास चाउर दालि , अल्लू आ नूनक संगहिं किछु टका सेहो देने रहैकि । आ तकरबाद घरक नीप–पोत, हाट–बजारक गतिविधि बढ़ि गेल रहैक । दसे दिनक बाद घरमे ढ़ोल–पिपही बाजए लगलैक । साँझखन क' गोसाउनि–घरमे कनियाँ"–मनियाँ आ बुढ़ियादाई सभक जमघट तथा गीतनाद होमए लगलैक । बब्बूकेँ आगाँ राखि नहि जानि कतेक विधवाध कएल गेलैक । ढ़ोल–पिपही आ गीतनादसँ ओकर कान भारी भ' गेल छलैक । मुदा तैयो सभ किछु रमनगर लगैक । बब्बू हर्षित रहैक तैँ।

ओहि दिन भोरेसँ भीड़–भाड़ रहैक । गोसाउनि–घरमे पूजा–पाठ भेलैक । ओही त्रmममे गोलबाकेँ दू गोट छौंड़ा पकड़िकए पोखरि ल' गेलैक आ नहा देललैक । बड्ड जाढ़ भेलैक गोलबाकेँ । माघ महीनाक जाढ़ आ ठढ़ल पोखरिक पानि ! छौंडासभ सोझे पोखरिमे बुड़का देने रहैक । बेचारा गोलबा मेमिआए लागल, पैखाना–पेसाप सभ भ' गेलैक । डरे परान निकलए लगलैक । विवश गोलबाक गर लागि गेलैक । ओ बब्बूक स्मरण कएलक । एखन बब्बू रहितैक तँ एना होइतैक ?! छौंड़ासभ ओकरा कोरमे उठओने गोसाउनि–घरमे ल' गेलैक आ बब्बू लग ठाढ़ क' देलकैक । तखन जा क' ओकर परान पलटलैक । बुझएलैक, ओकरो एहि समारोहमे सहभागी बनाओल जारहल छैक । ओ चारु भर देखए लागल । जाढ़े देह थरथराइक मुदा तैयो ओ अपनाके" स्थिर करक पूरा प्रयत्नमे लागि गेल । ओ अपनाके" स्थिर करएमे लागले रहए कि पण्डितजी जोड़–जोड़सँ मन्त्र पढलखिन्ह आ बब्बू ओकर माथपर अक्षत, फूल आ पानि ढ़ाड़ि देलकैक । माथ सर्द भ' गेलैक आ केशमे अक्षत फूल घुसिआ गेलाक कारणेँ ओकरा कोरिअइनी लागि गेलैक । ओ जोड़सँ अपन माथ झटकए लागल । पण्डितजी 'जय भगवती ! जय माते !! ' चिचिआए

लगलखिन्ह । बब्बू पाछाँ हटि गेलैक । एक गोटे पाछाँसँ ओकर दुनू पएर पकड़ि लेलकैक । दोसर ओकर गर्दनपर हाथ फेरए लगलैक । .... आ .... छपाक †

आहिरो ! ई की भेलैक ?! ओ तँ अपन धरसँ अलग भ' गेल अछि !!! आब ने ओ धरसँ अलगे फेकाएल माथमे अछि ने धरेमे । ओ अपन अलग भेल मुड़ीक मुआयना करैत अछि । असह्य पीड़ाक प्रतिविम्व छैक – उनटल आँखि आ दाँत तर दने निकलक जीभ । दाँतक दबाब एतेक जे आधा जीभ कटाइये गेल छैक । धरोक हालत ठीक नहि छैक । छिड़िआएल चारु टांग आ तानल धर एकदम कड़ा भ' गेल छैक । ओ अपनाके" एकदम हल्लुक पाबिरहल अछि । अनन्त अन्तरिक्षक यात्राक हड़बड़ी भ' गेल छैक एहि अनन्त यात्राक कतहु कोनो पड़ावपर ओकरा दोसर शरीर धारण करक छैक । नहि जानि ओ पड़ाव कतए हएतैक ? तखने ओ पुनः दुःख–सुख आ भावनाक संवेगकँ भोगि सकत । स्वाद आ श्रंगारक रस पिबि सकत । अथवा अन्य कोनो अनुभूति ल' सकत । .... गोलबा पुनः एकबेर स्थितिक जायजा लैत अछि । सोनी–मोनी पानि गरमारहलि छैकि । छौंड़ासभ ओकर धर छोलएलेल केराक पात आ औजारसभ ठीक क' रहल अछि । भन्सीआसभ बड़का कराह आ भट्ठीक प्रबन्ध मिलारहल अछि । बड़कीमाइ कनियाँ–मनियँ"सभकँ मर–मसल्ला, तेल, पिआउज आदिक वन्दोवस्तमे लगओने छैकि । पिअर, धोती, कुरता आ गमछामे मुण्डित माथ नेने बब्बू अपन दोससभक संग हँसि–हँसि क' बतिआरहल अछि । दरबज्जापर दरदेआदसभ मस्त खैनी चुनबैत गप्प–सप्पमे लागल छैक । चितकबरी नोराएल आ"खिसँ अपन पहिल बेटाक धरदिसि टुकुर–टुकुर ताकिरहलि अछि । ..... ओ कोनो झोंका जका" अन्तरिक्षदिसि उधिया जाइत अछि । एकदम निस्पृह भावेँ ! ई सभ स्वाभाविक छैक । ओहो स्वाभाविक रुपेँ प्रकृतिक स्वाभाविक प्रत्रिmयामे आगाँ बढि जाइत अछि । आब ओ गोलबा कहाँ अछि ?!

डीप डिप्रेशन

डाक्टरके बात सुनिकए ओ फिस्स द' अपन ठोर पसारि देलक । मुदा, डर भीतरतक पसरि गेल छलैक जे ओ नुकबए नहि सकल छल । ओकरा डिप्रेसन तँ नहि हएबाक चाही ! बच्चेसँ ओ सभलग निडर, साहसी, केहनो परिस्थितिसँ डटिकए भीड़एबलाक रुपमे अपनाकेँ चिन्हबएमे सफल भेल अछि । ओहो अपनाकेँ साहसी आ जुझारु बुझैत आएल अछि । एकरे ने आत्मविश्वास कहैत छैक ! कहिओ ककरोसँ डेराएल नहि आ ने कहिओ कतहु हिम्मते हारलक ! तँ कोना ओकरा भ' जएतैक डिप्रेशन ? जरुर डाक्टरकेँ धोखा भेलैक अछि । एकर डाइग्नोसिस ठीक नहि छैक । ओकरा लगलैक जे ओ कहैक —'अहाँक डाइग्नोसि ठीक नहि भेल । कतहुँ कोनो गल्ती भ' गेल अछि ।' मुदा फेर ओ सोचैत अछि जे किआ कहौक ? डाक्टर आओर भ्रमित भ' जाएत ! कहाँदोन डिप्रेशनक रोगी कहिओ नहि स्वीकारैत छैक अपन बिमारी आ ने दबाइयो खाए चाहैत छैक । एखन कहतैक जे नहि, हमरा ई रोग नहि लागल अछि । अथवा आयँटायँ बजतैक तँ डाक्टरकेँ लगतैक जे बिमारी तेज छैक आ ओ दबाईक मात्रा बढा देतैक । चलू अहिना ठीक छैक ! ... दोसर ई जे सभ डाक्टरबा अपना छाड़ि दोसरकेँ मनुख नहि गनैत अछि । महान आ भगवान बुझैत अछि अपनाकेँ ! पारा दस गुणा चढ़ले रहैत छैक । ओ अपन बाजएलेल खुलल मुह बन्द क' लैत अछि ! ... डाक्टर ओकर चुप्पीकेँ स्वीकारोक्ति बुझैत अछि आ ओकरा लगैत छैक जेना ओ खूब प्रसन्न अछि । तैँ तँ गर्वसँ चारुभर देखिरहल अछि ! मुदा साँच तँ ई जे ओकर डाइग्नोसिस फुसि छैक । ओकरा लगैत छैक जे संगे आएल ओकर छोटका डाक्टरक बातसँ

सहमत भ' गेल अछि । बेचारा बड्ड चिन्तित अछि । छोटकाक मुह देखि ओ आओर गम्भीर भ' जाइत अछि । फेर घरमे सेहो सभक चिन्ता बढ़ि जएतैक, पूरा परिवारकँ सुखैनी लागि जएतैक । ओ सहज रहए चाहैत अछि । एकरो किछु ने किछु प्रभाव तँ अवस्से पड़तैक । ओ सोचैत अछि —'चलू ठीक छैक !'

ओकरा पते नहि चललैक जे ओ चुपचाप टकटकी लगओने डाक्टरकँ देखिरहल अछि । डाक्टर फट् द' बाजि उठलैक — "किआ घूरैत छी ! चिन्ता करक कोनो जरुरति नहि ! एहन कोनो बात नहि । दबाइ नियमित खाउ, एकदम ठीक भ' जाएत । ... आइकाल्हि ई रोग सामान्य छैक । सगरो देखएमे अबैत छैक । आधुनिकताक देन अछि ! विकासक संगी !! "

आब भेल ! लिअ' !! ओकरा लगलैक जे ओ फेर बिनासेतीये हारि गेल अछि । अहिना होइत अएलैक अछि । ओ कोनो काज सोचि–सोचि कए करैत अछि कि केओ ने केओ टपकिए जाइत छैक । ओ तँ चाहिते रहए जे कहैक — " ठीक छैक डाक्टरसाहेब, हमरा रोग तँ नहि लागल अछि तैयो ई दबाइ जौँ हानि नहि करए तँ हम नियमित खाएब ।'' बाजएमे कनियेँ देरी भेलैक कि कहिदेलकैक जे घुरैत छिऐक कहाँदोन !

"भिनसरे किछु खा' क' एक गोटी खा लेब आ रातिमे सुतए काल एकटा ! घी तेल आ फ्याटी खानपानसँ बचक कोशिश करब !! " — कहैत डाक्टर पूर्जा थमा देलकैक ।

* * *

आइ फेर ओ झूठ बाजलि । ओकरा वास्तविकता पहिनेसँ बुझल रहैक । बात त एकदम छोट मुदा झूठ बाजक प्रयोजन की ? छोटो बातकँ महीन तँ ई ने बना दैत छैक ! इएह प्रश्न ओकरा बेचैन क' दैत छैक । ओ विचलित भ' जाइत अछि आ ओकरा लगैत छैक जे छाती बाहर फेका

जएतैक । ओ अपन छातीपर अनेरे हाथ राखि लैत अछि । छातीक कुदनाइ किछु कमतैक की ?! ... ओकर बिमारिये यएह छैक । एहिना होइत आएल छैक । डाक्टरोक इलाजसँ लाभ कहाँ भेलैक ? आखिर बिमारीक कारण हटैक तखन ने !

शुरुआत तँ ओकरहिसँ भेल रहैक । शुरुआती दिनक बातसँ ओ आओर घबरा' जाइत अछि । ओ आओर कसिकए अपन छाती पकड़ि लैत अछि । लगैत छैक ओकर दम फुलि जएतैक । ओ चिन्तित भ' जाइत अछि । दिवालपरक घड़ी देखि अपन नाड़ी देखए लगैत अछि । ठीके तँ छैक ! कनेके बेशी ने छैक !! एहिसँ कोनो गड़बड़ी नहि हएत । सोचैत अछि, एकबेर प्रेसर सेहो देखि लेअए, मुदा एक मने लगैत छैक बेकारे ! कहुँ बेसी हएतैक तखन ? जे हएतैक से हएतैक ! किछुओ होइक !! ओ ओछानपर ओलटए–पलटए लगैत अछि । फेर सोचैत अछि जे सावधानी लेबाके चाही । गुरुजी कहथिन — æजीवन महत्वपूर्ण अछि । मृत्युलोकमे लोक अनुभूतिलेल अबैत अछि । प्रेम–घृणा, दुःख–दर्द, हर्ष–पीड़ा, मित्रता–दुश्मनी, सहयोग–असहयोग, निर्णय–अनिर्णय, नीति–अनीति आदि–इत्यादिक अनुभवसँ आत्मा परिष्कृत होइत अछि जे जन्म–जन्मान्तरतक संचित रहैत छैक । नहि जानि कतेक जन्मकक बाद आत्मा परिपूर्ण होइत अछि आ तखन ओ दोसर परायात्रालेल काबिल भ' जाइत अछि !" तहिना कहाँदोन कतेक परायात्रा होइत रहैत छैक । ओकरा ई सभ बात अबूह लगैत छैक । एक दिन ओ गुरुजीकँ कहबो कएने रहनि — æआ अन्तमे की होइत छैक ? " गुरुजी बाजल रहथिन्ह — æसे हमरा बुझल नहि अछि ! तखन फेर एहि यात्रासभक आवश्यकते किआ रहि जाएत ? एखन एतबे बुझू ! जीवनकँ पूरा आ मनसँ जीबू !! कोनो काज करैत काल मनसँ पुछू । जे कहैत अछि सएह करु । मने तँ असली गुरु अछि । कहिओ बेजाय निर्देश नहि देत अहाँक मन ! "

ओ मनसँ पुछए लगैत अछि । ओकर हाथ ससरकिए फेर नारी पर चलि जाइत छैक । ... ठीके छैक । तखन एना किआ होइत छैक ? ओ सोचैत अछि एक बेर आओर दोहरा लैत छी । ओ दोहरएलक, तेहरएलक । ठीके छैक ! ओ अन्ठाकए सुतए चाहैत अछि । अपनाकेँ बुझब'के कोशिश करैत अछि । मनेमन कहैत अछि —'छोटछीन बातपर एतेक विचलित नहि हएबाक चाही ।' बाबा कहथिन चिन्ता जिविते चितासन अछि, तेँ चिन्ता नहि करी !' ओ अपन माथ झटैक लैत अछि । मुदा, कहाँ हटैत छैक चिन्ता ?! चिन्ता कोनो लोक जानि क' करैत अछि ? कए बेर सोचलक, ओ मजबूत अछि आ ओकर हृदय मजबूत छैक । ओ आब एहिसभ बातपर ध्यान नहि देत । ओकरा लोक साहसी कहैत छैक । ओ कहाँदोन संकटकेँ अपन धैर्य आ सहनशीलतासँ सहि लैत अछि । ओकरा अपनो बुझाइत छैक जे वास्तवमे एहि गुणसँ ओ परिपूर्ण अछि । सामान्य अवस्थामे जेनातेना मुदा असमान्य अवस्थामे ओ अपनाकेँ मजबूत महशूस करैत अछि । लगैत छैक जेना भीतर केओ आन पसि गेल होइक । केओ कतहुँ लिखने रहैक जे महान आत्मासभ खतरामे लोककेँ रक्षा करैत छैक । तेँ कहिओ काल असामान्य रुपसँ साहसी, बुद्धिमान आ विवेकशील भ' जाइत अछि । कहुँ ओकर पितृसभ ओकर रक्षा करैत होइथिन्ह ! एतहुँ साहस देथुन्ह ने ! अहू चिन्तासँ मुक्त करितथिन्ह तँ कतेक नीक होइतैक !! ... ओ आँखि मुनि लैत अछि । आब चिन्ता नहि करत । सभ ठीक भ' जएतैक । मुदा होउक तखन ने ! तर्क ओकरा कहैत छैक जे ओ सोचैत अछि से नहि हएतैक । हएबो करतैक तँ की अन्तर ? इहलोक आ परलोकमे एहिसँ की अन्तर ? मुदा व्यवहारमे तँ एतहि अन्तर बुझारहल छैक ! ओ गुरुजीकेँ याद करैत अछि । ओकरा लगैत छैक जेना कहैत होइथिन्ह — 'मनुख अपनालेल अनुभूति करैत अछि , ककरो दोसरलेल नहि । यदि एहनो छैक तँ कोनो बात नहि । अहाँकेँ कोनो असर नहि पड़त । रोकक कोशिश धरि करक चाही तेँ संकेत धरि अवस्से क' दिऔक । आक्रामक नहि

बनब । दोसर, जे अनुभवकेँ आत्मसात क' लिअ आ दोसर दिस ध्यान करु । दोसर अनुभूतिक तैयारी करु !' ओ सोचैत अछि आब अध्यात्मदिस ध्यान देत । कतहु चलि जाएत । ध्यानपर अपनाकेँ केन्द्रित करत । मुदा भविष्यक निश्चित रेखाङ्कनक आभावक कारणेँ ओ डेरा जाइत अछि ।

एहिमे कोनो शंका नहि जे एहि बातकेँ आब बेशी तुल नहि देबाक चाही । तैँ ओ मनसँ हटाइयो लैत अछि । पूरा बिसरि जाइत अछि मुदा एकदम छोटछीन बातपर सभकिछु फेर प्रकट भ' जाइत छैक । सिनेमाक रील जकाँ ! जखने ओकरा लगैत छैक जे फेर झूठ बाजल जारहल अछि, ओकरा झाँसा देल जारहल छैक, कोनो बहन्नाक कोशिश कएल जारहल अछि तँ ओ तिलमिला जाइत अछि । पहुनकासभ घटना ओकर माथमे घुमए लगैत छैक । बिसरने नहि बिसराइत छैक । आ फेर जेना छातीमे केओ भाला भोंकि देने होइक तेना ओकर हृदय कुदए लगैत छैक, कुहरए लगैत छैक । मनक भोकासी छातीक ढ़कढ़कीक रुपमे निकलए लगैत छैक आ हाथ सोझेँ छाती पकड़िकए दाबि लैत छैक । लगैत छैक जे कतहुँ परान निकलि ने जाय ! कोनो दिन कहुँ अहिना परान निकलियो नहि जाई !!

आइ–काल्हि ओकरा टकटकीयो लागि जाइत छैक । मनमे अबैत छैक कोनो बात आ ओहीमे ओ केन्द्रित भ' जाइत अछि । लगपासक कोनो चीज वा हलचल ओ बुझिए नहि सकैत अछि । शरीर पूरा थीर भ' जाइत छैक । ओकर आँखिक पपनी अपन हिलडोल बन्द क' लैत छैक । सत्य कहू तँ ओ गतिहीन बनि जाइत अछि । घण्टा तँ नहि मुदा बीसो मिनटतक ओ एहिना रहैत अछि । जखन छाती दुखाए लगैत छैक तँ होश अबैत छैक आ ओ बुझि जाइत अछि जे फेरो ओ की–की कहाँदोन सोचए लागल छल आ तखन ओ छाती हँसोसति अपन ध्यान दोसरदिस घुमाब'क कोशिश करए लगैत अछि । मुदा कहाँ घुमैत छैक ध्यान ? ओकरा लगैत रहैत छैक जेना आब ओ बिसरघोर भ' गेल अछि । नजदीकक लोकक सेहो नाम याद नहि रहैत छैक ।

मुदा, सभसँ पीड़ा तँ तखन होइत छैक जखन जाहि बातसभकेँ ओ बिसरए चाहैत अछि तकरा बिसरिए नहि सकैत अछि । उफ ! कोना कोना बिसरओ ओ ओहि घटनासभकेँ ?! केओ सिखा दितैक !

ओकरा ओहिना याद छैक जे ओ आनायासे अफीससँ सबेरे लौटि गेल रहए । गेट ढ़कढ़कओलक तँ लेटसँ खुजलैक । भीतर प्रवेश कएलक तँ बरण्डापर एकगोटे आओर रहैक । ओ ओकर परिचय कलेजक अपन सहपाठीक रुपमे करओलकैकि आ कहलकैकि — æअचानक दोकानपर भेँट भ' गेल छल । कलेजक बाद पहिल बेर भेँट भेल । बहुत रिक्वेष्ट कएलिऐक तँ चाय पिअएलेल आएल ।" ओकरा तँ खुशी भेल रहैक । हृदयसँ स्वागत कएने रहैक ओ । ओकर सासुरसँ सम्बन्धित जकाँ लागल रहैक । चाहैत रहए जे ओकरासँ कनेक गप्प–सप्प करैक । मुदा, ओ तुरत्ते जाएलेल तैयार भ' गेल । कहए लागल —"जल्दी अछि । ओहिना बड्ड अबेर भ' गेल अछि । एक गोट अप्वाइन्टमेन्ट अछि ।" जाइत–जाइत तुलसीक पुड़िया खएने रहैक । मुहसँ तँ ओहुना तुलसी खैनी पत्तीक गन्ध अबिते रहैक । ओ चलि गेलैक तँ ओकर नजरि ओतए राखल चायपर पड़ि गेलैक । ओ कहबो कएलकैक —æचाय नहि पिलक ?!" मुदा कोनो जबाब नहि आएल रहैक । किछु खास तँ बुझएलैक मुदा किछु बाजल नहि । घरमे भीतर गेल तँ खिड़कीसभ बन्द रहैक आ पर्दा लागल रहैक । किछु असामान्य जकाँ । ओ तैयो चुप्पे रहल । कोना कहितैक ? ओहिना आरोपित करब तँ अन्यायपूर्ण होइतैक ने ! ... रातिमे ओछानपर गेल तँ तुलसीक ओएह दिनका गन्ध महशूस भेल रहैक । .... धत्त ! ओ बड्ड शंकालु अछि । फेर किदन कहाँदन सोचए लागल । ओ माथ घुमाकए फुलवारीदिस ताकए लागल । एकटा कौआ गाछपर बैसल रहैक । ओकरा देखलकैक तँ लोल घुमा लेलकैक । लगलैक कौआ किछु नुकारहल छैक । ओकर दृष्टि कौआपर आओर कसिकए ठमकि गेलैक !

कएगोट कष्टप्रद प्रसंग ओकरा पछुअबैत रहैत छैक । ... कएबेर बहुतो किछु ओकरा असामान्य लगैत रहैत छैक आ ओ झटकारए चाहैत रहैत अछि, मुदा ओ सभ प्रसंग ओकरा शंकालु बनबिते जारहल छैक । ओ ठीके बिमार होइत जारहल अछि । ओ अपनाकेँ बुझब'के बहुतो कोशिश करैत अछि मुदा पीड़ा बढ़िते जारहल छैक ।

* * **

डाक्टरक क्लिनिकमे प्रतिक्षा करैत ओकरा बैचैनी जकाँ भ' रहल छैक । ओकर हाथ छातीकेँ कसिकए पकड़ने छैक । लगैत छैक घामे ओ नहा जाएत । छोटका एम्हर–ओम्हर घुमिरहल छैक । समय तँ बुझाइत छैक ओ पहिंनहिसँ नेने रहैक । पता नहि दोसर रोगीमे डाक्टर कतेक काल लगाओत ? ... १०÷१२ दिनसँ ओ बेशी बेचैन भ' गेल अछि । मुदा, ककरो किछु कहने नहि रहैक । सोचलक ककरो नहि कहतै । कहिओ क' करतैक की ? आ कहबो की करौक ? ओ नियतिकेँ स्वीकारि नेने रहए । एहि जीवनमे एहनो परिस्थितिकेँ ओकरा भोगहीक छैक । ओ तँ ओहि दिन छोटका अएलैक तँ नहि जानि की भाँपि लेलकै । सामान्य हालचाल पुछने रहैक आ ओ एकर असामान्य बेचैनीकेँ बुझि गेलैक । ओकर मुहेसँ बुझाइक जे ओ चिन्तित अछि । कहक कोशिश कएलक जे चिन्ताक कोनो बात नहि ओ ठीक अछि, मुदा बकार नहि फुटलैक । जिजिविषा आ मोह छुटल तँ नहिअे छैक ने ! ओकरा अपनो मन तँ हड़बड़ाएले छैक । रहि–रहिकए डाक्टरक कोठरीदिस ध्यान चलि जाइत छैक जे दुआरि खुजलैक कि नहि ?!

दुआरि खुजलैक तँ जोड़सँ डाक्टर ओकरे नाम चिचिअएलैक । ओ ठाढ़ भ' गेल । छोटका ओकरा भीतर ल' गेलैक । ओ रोगीक सीटपर आश्वस्त भ' बैसि गेल जे चलू समयपर डाक्टरलग छी, आब किछु नहि हएत ! छोटका सेहो ठाढ़ रहैक । टुकुर–टुकुर देखैत । बेचारा ओकरा बड्ड स्नेह आ सम्मान करैत छैक । डाक्टर ओकरा बाहर जाएलेल इशारा कएलैक आ

कहलकैक — æहम हिनकासँ असगरे बतिआएब !” छोटका चुपचाप बाहर निकलि गेल ।

æकी होइअ ? ” — जखन डाक्टर पुछलकैक तँ ओ तपाकसँ बाजल —æजी, मन बेचैन भ’ जाइत अछि । लगैत अछि जेना छाती घड़फड़ा जाइत हुअए । कुदए लगैत हुअए ! आ घबराहट बढ़ि जाइत अछि ।”

ओ अपनाकेँ संयत करैत कहने रहैक । ध्येय रहैक जे डाक्टर ओकरा मानसिक विषादसँ अलग मानौक । मानसिक रुपसँ ओ ठीक अछि से बुझौक । ई नहि जे ओ ई बात नहि बुझैत अछि । मुदा, ओ चाहैत अछि जे केओ ओकर मनक परत तक नहि पहुँचओ । ओकरा आओर नहि खोधओ । ओ एहिसँ डेराइत अछि । एहि पीड़ाकेँ आओर भोगए नहि चाहैत अछि ।

æठीक छैक । अच्छा, कनेक जाँच क’ लैत छी ।” — कहैत डाक्टर अपन प्रेसरक मशीन निकालि लेलक आ ओकरा सुताकए दहिना बाँहिपर कसए लागल । पम्पसँ हावा देलकैक आ फेर आला कानमे लगाकए हाथपर राखि प्रेसर देखए लगलैक । ओ आरामसँ सुतल रहल । एखन ओकरा बहुत आराम बुझारहल छैक । डाक्टर लग अछि ने, किछु अपरझट्टे तँ होमए नहि दैतैक !

æब्लडप्रेसर तँ ठीक अछि । तखन एना होबक तँ नहि चाही । जरुर किछु बात हएतैक ?” — डाकटर पुछलकैक — æएना कखन क ’ होइत अछि ?”

æ कखनो भ’ जाइत अछि । समयक कोनो ठेकान नहि, डाक्टर साहब ।”

æ हूँ sss ! ... अच्छा, कतेक काल रहैत अछि ओना ?”

æ कखनो एकाध मीनेट । मुदा, कखनो तँ नीके नहि होइत अछि, बड़ी कालधरि खेहारैत रहैत अछि ।”

æ एना असगरमे की लोकक बीचमे ?”

æएसगरिमे तँ बेसीकाल । कहिओ काल लोकक बीचमे सेहो ।” — ओ कनेक झेंपिकए बाजल । ओकरा लगलैक डाक्टर आब ओकर असल नब्ज पकड़िरहल छैक ।

æ जरुर किछु बेसी सोचैत हएबैक ? की सोचैत रहैत छी ? कोनो विशेष बात ? ”

æ नहि, तेहन खास तँ नहि ।”

æकिछु तँ जरुर छैक जे आहाँकँ बेचैन क’ दैत अछि । ... हमरा कहू , हम ककरो नहि कहबैक । आहाँक इलाजमे हमरो सुविधा हएत आ अहूँकँ जल्दी ठीक हएत । कोनो बात, किछुओ होए तँ कहू । पूरा गोप्य रखैत छिऐक हम । यदि कोनो अपराधो भेल होए तँ कहू ! केओ सूँघए सेहो नहि पाओत !! कहू !!! ” — डाक्टर बातक जड़ि पकड़ि नेने रहैक । ओ फेर बेचैन भ’ गेलैक । ओ फेरो अपन छाती जोड़सँ पकड़ि लेलकैक । माथ घामसँ बुनबुना गेलैक ।

æअच्छा, अहाँक बेचैनी फेर बढ़ि गेल । कनेक फेरो सुतू तँ !” — डाक्टर ओकर बेचैनी नीकसँ बुझि गेल छलैक । फेर ब्लडप्रेसर लेबए लागल । ओ चुपचाप पड़ल रहल ।

æ हूँ sss ! ... एखन किछु अनायासे बढ़ल अछि !” — डाक्टर अपन कुर्सीपर बैसि ओकरा स्टूलपर बैसक इशारा करैत कहलकैक — æ किछु तँ जरुर अछि जे अहाँकँ हम अनचेते याद करा देलहुँ । .... देखू, साफ–साफ कहए पड़त । नीक इलाज तखने सम्भव हएत ।”

æजी नहि तेहन कोनो बात नहि छैक !” — ओ जोड़ दैत कहलकैक ।

æ अहाँ नुकारहल छी !”

æ जी नहि ! ”

ॠदेखू डाक्टर आ वकीलसँ झूठ नहि बाजी । गलत इलाज भ' जाइत छैक । वकीलकँ जौँ सभ बात नहि कहलजाय तँ मुद्दा हारब निश्चिते बुझू । तैँ सभ किछु बताउ । ... एकदम ठीक भ' जाएत ।" — डाक्टर सम्झओलकैक मुदा ओ चुप्प रहल । कोना किछु कहौक ? सोझँ लांछना कोना लगादौक ! बिर्रो उठि जएतैक । ओकर सम्पूर्ण परिवार बिखरि जाएत । ओकर अपनो इज्जत कतहु बाँकी रहतैक ?! फेर कोनो प्रमाण तँ नहि छैक ! कहूँ कर बात निराधार हएतैक तँ कि हएत ? ... नहि एहन अन्याय नहि करत । किछु क' लेतैक तँ ?! ओकर दुनियाँ उजरि जएतैक । फेर ओ ओहन नेओतल पीड़ा कोना बर्दाश्त करए सकत ? एहि डाकटरक कोन ठेकान ? कतहुँ बाजि देलकैक तँ ? नहि, नहि ओ एहन काज नहि करत । ओ एखनधरि अपन एहि समस्या गुरुजीकँ तँ कहनहि नहि अछि, तँ एकरा कोना कहत ? चाहे किछु भ' जाउक । ओ रहओ वा नहि । एहन अन्याय नहि करत । असह्य दुख बैसाहि क' अपनेसँ नहि धरत । बरु सहि लेत । अपन मनकँ अपने सम्झाबुझा लेत । डर खाली एक्केटा जे ओ झूठ नहि बजौकि ! झूठ बजिते ओकरा फेर ई सभ बात तंग करए लगैत छैक । स्लाइड जकाँ स्वचालित देखाए लगैत छैक ।

डाक्टर अनेक प्रकारसँ ओकरा किछु ने किछु पूछैत रहलैक । लेकिन ओ कतिआइते गेल । ओकरा लगलैक जे डाक्टर आब थाकि गेल छैक । तैँ तँ ओ नम्हर साँस लैत कहलकैक — ॠठीक छैक ! अहाँसँ फेरो बात करए पड़त । एखन ई दबाइसभ खाउ । १५ दिन बात फेरो आएब । ... आ आहाँक संग जे आएल छथि .... कनेक हुनका बजबिऔन्ह ।" — ओ टेबुलपर झुकिकए दबाइ लिखए लागल । केबार खोलि ओ छोटकाकँ इशारा क' देलकैक आ अपने दुआरिपर कान थपने ठाढ़ भ' गेल ।

ओ बाहर ठाढ़े छल । छोटका धड़फड़ाकए भीतर पैसलैक तँ ओकर कानमे डाक्टरक शब्द गुँजलैक — ॠडीप डिप्रेशन !” आ केबार ढ़प्प द’ बन्द भ’ गेलैक !



चौकपरक मौगी

हँ, आब ओकरा चौके तँ कहैत छैक । नाम धएलकैक अछि मेगा चौक ! कनेक अङरेजिया नाम । एहिसँ नवतुरिया कर्णधारसभमे अपन मौलिकता, संस्कृति, भाषा आदि आ कही तँ साँच ई जे स्वयं अपनोप्रति बढ़ैत हीनताबोधक स्थिति सुझाइत अछि । ठीके कहैत छैक, दूरक ढम-ढम सभकेँ सोहाओन लगैत छैक । आब अपनासभक भाषासभपर आधुनिकताक नामेँ अग्रेजी आ कतहु-कतहु लैटिन शब्दसभ चढ़ैत जा’रहल अछि । किछु दशक पश्चात् इएह शब्दसभकेँ लोक अपन कहए लागत । आब लोक अपनोकेँ विदेशी सन बदलए चाहैत अछि । केश रंगि लैत अछि ! सेहो एहन रंगमे, जे की कहू ? पहिने एहन केशबलासभकेँ

गामघरमे खौंझबैत लोक भटरंगा कहैक । नीको कोना लगैत छैक नहि जानि ?! एहि शहरमे एकटा एहनो लोक छथि जे जवानीमे एक बेर विदेश गेला तँ अपन चमड़ीयोक रंग उड़ा लेलैन्हि । एखन उमेर बढि गेलनि तँ केशो रंगब मोसकिल भ’ गेल छन्हि । चोकटल मुँह-कान, देहपरक उड़ल चमड़ी आ देशी केश ! सोचि सकैत छी जे केहन लगैत हएतैन्हि !! भेलै छोड़ू, आबक बोलीचाली एहिना होइत छैक ! एहि शब्दसभक ज्ञान बिनु आब काज कहाँ चलैत छैक ?! आ तैँ आब बूढ़ो-पुरानसभ एहि शब्दसभक प्रयोग करए लागल छथि । देहातक सेहो आब तेजीसँ शहरीकरण भ' रहल छैक । काल्हितकक बाध आ चओर जे धान, गहूम आ तरकारीक खेतीसँ लहलहाइत छल, तइ हरितक्षेत्रपर देखिते-देखिते धराधर चारुभर घर, बंगला, महल आ शापिंग अट्टालिका ठाढ भ’ गेल अछि । फूसबला गरीबी राताराती अमीरीक अम्बारमे बिला गेल अछि । चारू भर अकस्मात् विलासिता बरसि गेल छैक । पुरनका खेतिहरसभ अपन नेनाभुटकाकेँ दूर ठाढ़ भ’ कोनो-कोनो निर्माण देखबैत रहैत अछि । शायद पहिने अपन छल से कहैत रहैत अछि । बच्चासभ नहि जानि की सोचैत गुम्म रहैत अछि । परिवर्तनक गति तीव्र छैक । एक्के दू बरखक अन्तरालमे एहि टोलमे आबैबलाकेँ लगतैक जेना भुतला गेल छी । ... अपेक्षाकृत नीक मुदा सस्त डेरालेल हम ओहि नव टोलमे बास धएने रही । पहुनका माटिबला सडकसभ आब गिट्टी आ धीरेधीरे पीचमे बदलि गेल अछि । पहिने तँ कोनादन लगैत छल — शहरक बजार लग होइतो

घूमिकए जाए पड़ैत छल । आब नदीक आरपारलेल दूलेनियाँ पुल बनि गेल छैक । तैँ डेरासँ निकलएबला गल्ली आब सामान्य सड़क भ' गेल अछि आ पुल बनि गेलासँ चौड़ा सड़क मिलएबला जगह बस सोझहिं चौक भ गेल छैक । पहुनका अन्न आ तरकारी बजारमे भाड़पर ल' जा' क' बेचएबला कृषकसभ आब आराम करए लागल अछि आ ओकर बेटासभ जमीनक महँगीक लाभ ल' कि तँ बिजनेश कए मालामाल भ' गेल अछि अथवा फुटानीसँ बर्बाद ! कएटाक कानमे कुण्डल झूलैत रहैत छैक आ ओसभ आमदनीक वास्ते मारिपीट चाहएबला असामीक खोजमे चौकपर ठहक्का दैत विज्ञापन करैत रहैत अछि । चायपानक व्यवस्था फोकटमे । कारण ओकर नङ्गोटिया बेपारीसभ एकरा अपन जिम्मेदारी बुझैत अछि । संगीसभकलेल सहयोगक सट्टो आ अपन अदृश्य सुरक्षा व्यवस्थामे मजबूतीयो —दुनू लक्ष्य एक्के लाठीसँ सम्हरि जाइत छैक ।

चौकक चारुभर मधुरक स्वीटहोम्स आ विभिन्न सौन्दर्य सामग्रीक कासमेटिक स्टाइलिस दोकानसभ खुलि गेल अछि । भिनसरमे आफिसवास्ते निकलैत छी तँ चौकपर जमबएबलासभक नीक जुटान रहैत अछि आ साँझमे पूरा शहरिया भीड़ । तरकारी आ सामान्य बजारलेल तँ लोक अबिते अछि, छोटछीन किनमेल अर्थात् शापिङ्गवास्ते नव धनाढ्य महिला लेडिज आ झिल्लिका स्पाइसीसभक भीड़ सेहो लागि जाइत छैक । मालकोसक स्थानपर रॉकसँ चौक गुञ्जैत रहैत अछि । रंगीन रोशनी आ इलेक्ट्रोनिक इजहारक प्रयोगक प्रारम्भसँ बुझाइत रहैत छैक जे टोल तथा चौक

आब आधुनिकताक उच्चतम बिन्दुपर अपन अर्जुनदृष्टि टिका चुकल अछि आ आब पाछाँ घुमिकए कहिओ नहि देखत । मुदा, एकटा कोन्ह उदास छैक । ओहि घराड़ीपर प्रायः कोनो झगडा छैक तैँ एखनो खाली अछि । जंगलिया घासफूस आ किछु परतीक झारभङ्गोरक एक मात्र स्थल आब इएहटा बाँकी छैक । ओतए मकैक ओरहा करएबलासभ अपन रोजगार करैत अछि । किछु खुदड़ा सिगरेट, बीड़ी आ गुटकाबलासभक जोगार सेहो चलि जाइत छैक । ओही घराड़ीक जमीनसँ डेढ़ दू हाथ उपर उठल कम्पाउण्डवालपर एकटा मौगी बैसलि रहैति अछि । चुपचाप चारुभर तकैति, कखनो पएरक औंठासँ माटि उकटैति तँ कखनो मुड़ी गोंतने । अछि अतीव सुन्दरि । मैल–झेल सलवारकुर्तीक बादो ओकर कसल, उठल, आकर्षक वक्ष आ गोर–ललोन वर्ण सुन्दरताकेँ मलीन नहि करए पाबिरहल छैक । श्रृंङ्गार–पटारक नामोनिशान नहि छैक । केशमे जेना महीनोसँ तेल नहि पड़ल होइक, कनेक जटाएल जकाँ लगैत छैक । मुदा माङमे सदिखन पूरा सिन्दूर थोपल रहैत छैक । शायद सभदिन ओ सिन्दूरधरि जरुर करैति अछि । हम हरेक दिन लगभग १० बजे आफिस निकलैत छी तँ ओ ओतए बैसले रहैति अछि । शायदे कहिओ नहि देखने हएबैक । आ तहिना ५ बजेक बाद घुरैतकाल ओ ओत्तहि बैसलि रहैति अछि । ओही ठाम कनेको एम्हर–ओम्हर घुसकल नहि । आब तँ हमर आदति भ' गेल अछि । घरसँ निकलिते हम ओहि चौकपर ओकरादिस एक बेर देखैत छिऐक आ घुरतीमे चौकपर पहुँचिते हमर आँखि ओकरहिं खोजए

लगैत अछि । हमरा चौकपर भ' रहल आओर गतिविधिसँ कोनो खासे मतलब नहि रहैत अछि । ... जहिआ नहि देखैत छिऐक हमर मोन उद्विग्न जकाँ भ' जाइत अछि । पता नहि किआ हमरा ओहि मौगीपर बेशी सहानुभूति भ' गेल अछि । जकरा स्वीकारएमे हमरा संकोच जरुर अछि मुदा ई सत्य छैक । ओ मौगी हमरा एना आकर्षित नहि करैति । मुदा एक दिन पुल लग कोनमे ओकरा हम हाँइहाँइ किछु पचलपीचल लतामसभ खाइत देखने रहिऐक । प्राय: कोनो फलफूलबला ओतए उझलि गेल रहैक । तहिआ ओकर कपड़ालत्ता साफ आ नीक रहैक । हमरा तत्क्षण लागल रहए जे ओ नीक परिवारसँ अछि आ शायद कोनो विपत्तिमे अछि । लागल केओ एतए फँसाकए आनिकए छोड़ि तँ नहि देने छैक । हमरा भीतरसँ इहो लागल रहए जे एकरा एकर स्थितिक बारेमे पुछितिऐक । मुदा फेर रङविरङक बात दिमागमे आबि गेल । लोक की कहत ?! कहूँ कोनो गड़बड़ मौगी हएत तँ !! आ हम आगाँ बढ़ि गेल रही । घुरतीमे चौकपर ठाढ़ भ' हम ओकरा पुल लग खोजने रहिऐक मुदा देखलिऐक नहि । लागल चलि गेलि हएति । मुदा, तकर किछु हप्ताक बाद जखन ओकरा ओहि कम्पाउण्डवालपर ओना बैसलि देखलिऐक तँ लागल जेना चिन्हैत होइऐक । दूचारि दिन देखैत–देखैत ठेकानपर आएलि जे हो न हो ओ उएह मौगी अछि । आ फेर ओहिना हम देखैत रहलिऐक । सभ दिन मोन होए जे एकरा किछु पुछैत छिऐक, मुदा ओतेक साहस नहि जुटा सकलहुँ ।

*   *   *

*

— æ राजेशजी, कनेक ओम्हर तकिऔक तँ !”

— æ कोम्हर ?”

— æ ओम्हर ! ... ओहि कम्पाउण्डवालपर । ओहि मकैक ओरहा बेचएवालीक लग जे भीड़ छैक, तकर पाछाँ !”

— æ हूँ, एकटा मौगी तँ छैक !”

— æओकरा हम सभ दिन अहिना बैसलि देखैत छिऐक । एसगरे ! ... कखनहुँ ककरोसँ बतिआइतो नहि अछि । अहिना असगरे बैसलि रहैति अछि । सभ दिन आफिस जायकाल देखैत छिऐक, अहिना बैसलि आ घुरतीमे सेहो नजरि पड़ि जाइत अछि । अहिना असगरे बैसले रहैति अछि ।”

— æहेतै केओ !”

— æकोनो विपत्तिमे अछि की ?!”

— æभ’ सकैत अछि । मुदा, करबैक की ? एहन बहुते छैक, एहि महानगरीमे !”

— æसे तँ ठीके कहलहुँ । ... तैयो एकर समस्या की छैक से जनबाक मोन करैत अछि ।”

— æतँ जा’ क’ पूछि आउ !”

- “ मनमे तँ कए बेर आएल, मुदा साहस नहि जुटा पाबिरहल छी ।”

- “ छोड़ू ! कहुँ कोनो एहन-तेहन बात हएत तँ अनावश्यक फँसि जाएब । ... आ कहूँ खराब मौगी हएति तँ लोक की कहत ? ”

— æसे तँ ठीके कहलहुँ । ... मुदा मानवीय संवेदना आबि जाइत अछि ।”

— æ अहाँ भावनामे बहि जाइत छी । कतेकँ देखबैक ?! हम अपने बहुत रास समस्यामे फँसल छी । पहिने हमरे मदति करु । दोसरक मदति पाछाँ करब । ... भौजी सुनतीह तँ मारि बेलन ठीक क’ देतीह !”

— æअहँकँ मजाक सूझैत अछि ! ... हम छी मुदा गम्भीर !! सिउँथमे देखैत छिऐक, मोटगर सिन्नुर थोपने अछि । एहिसँ तँ पक्का छैक जे ओ अपनेसभक दिसक अछि । ”

— æसे तँ लगैत छैक, मुदा आब पहिने जकाँ छैक जे एक–दू गोटे ओम्हरक एहि नगरमे अबैत अछि । ... आब तँ साँझमे चढ़ल आ भोरे पहुँचल । एकटा जमाना रहैक जे बाटा कम्पनीक ओ साहुजी न्यूरोडमे पीपर गाछलग ठाढ़ अबेरतक जकरा देखैक अपन डेरामे ठौर द’ दैक । आब तकर जरुरी नहि छैक ।”

— æअरे वाह ! ... अहाँ अम्बेसडर साहेब मोन पारि देलहुँ । की नाम रहनि, हुनकर ?”

— æनाम तँ नहि याद अछि । केओ नाम कहाँ लैक, सभ तँ एमबेसडरे ने कहैक मुदा रहथि ओ साहुजी । अपने दिसक ।”

— æठीके ! ओ महान रहथि । पर्सनलीटी एहन जे बुझाइक खूब नम्हर आदमी हएत । शूट-टाई पहिरने वेलड्रेस्ड, पएरमे एम्बेसडर जुत्ता आ कानक अन्तिमतक बाबरीक पट्टी । हुनकर कारी, साफ पालिस्ड एम्बेसडर जुत्ताक कारणेँ लोक एम्बेसडर कहन्हि !"

— æसे नहि कहिऔक, ओ ठीके नमहर आदमी रहथि । जतेक लोक अबैक तकरासभकेँ मदति करथिन्ह । लोककेँ खोजएमे, रस्ता देखाबएमे, पहिल बेर आएल अछि तँ ठौरतक पहुँचाबएमे सहयोग करथिन्ह । कोनो जोगार नहि होइक तँ अपने डेरामे रातिभरिलेल अतिथि बना लेथिन्ह । बाटा कम्पनीमे काज करथि । दोकान बन्द होइते पीपर गाछलग आबि हेराएल–भुतलाएल लोकक खोजी करथि । इहो दैनन्दिनीक एकटा अंग रहन्हि !"

— æसभ दिन साँझमे ओ पीपर गाछलग जएबे करथिन्ह, नहि ?"

— æ सभ दिन ! ... प्रायः केओ ने केओ भेटिए जाइन्ह । लगपासक होइक तँ जकरा खोजैत रहैत तकर डेरा पहुँचा देथिन्ह । नहि तँ अपना ओहिठाम ल' जाथिन्ह ।"

— æसएह तँ, आब ओहन लोक कहाँ भेटत ?!"

— æओ होटलमे खाथि । जे भेटैन्हि तकरा पहिने होटलमे ल' जाथिन्ह ।"

— æभोजनो करबथिन्ह, ?"

— æहँ, कैंचा नहि छैक तँ पाइयो द' देथिन्ह । ... घर घरएलेल भाड़ा किराया नहि छैक तँ सेहो सहयोग करथिन्ह । कतेक घुरा दैन्हि आ कतेक हुनकर सदाशयताकेँ कमजोरी बूझि ठकि सेहो लैन्हि ।"

— æबहुतके उपकार कएलखिन्ह ओ । हमरा एखनो ओ बाटाक दोकान मोन पड़ि जाइत अछि ।"

— æमुदा ओ तँ कहिआ उठि गेल !"

— æतैयो ओतए जाइत छी तँ लगैत अछि जे छैहे । ... हुनकर उपकारसँ कतेकँ कल्याण भेल हएतैक !"

— æमुदा, एकटा बात तँ जनिते हएब । ... हुनका किछु स्वनामधन्य बडकाÞसभ कहथिन्ह जे ओ साहुजी इन्टेलीजेन्सकेँ आदमी अछि । अपनासभक दिसक लोकसभपर नजरि रखैत अछि । ... आ बेशी लोक पतिआ' सेहो जाइक । "

— æअपनासभक समाजक इएह तँ बड़का रोग छैक । अपने करब नहि आ केओ करत तँ ओकरा पतित बनाकए प्रस्तुत करब ।"

— æतैँ तँ कहलहुँ अपन भावनापर नियन्त्रण राखू । ... चलू, आब अबेर भ' गेल !"

— æसे तँ ठीके कहलहुँ । ... चलू !"

⁕ ⁕ ⁕ ⁕

छुट्टीक दिन अबेरतक सुतब हमर आदति अछि । सृजना सेहो बुझाइत अछि अबेरतक सुतले छलीह । जखन चाय बनाकए ओ हमरा जगओलीह तँ आठसँ बेसी भ' गेल छलैक । कहलन्हि — æ आइ हमरो अबेर भ' गेल । उठू ने, भानसमे सेहो अबेरे हएत । ... हरियर साग सेहो नहि छैक। चौकदिस कनेक देखितिऐक !" आ तैँ बाथरुमसँ निवृत होइतहिं चौकदिस गेल रही । ओहि देवालपर नजरि जाएब स्वाभाविके छल । ओ एखन ओतए नहि छलि । डर भेल, जे कतहुँ कोनो विपत्तिमे तँ नहि फँसि गेल । ... केओ उठाकए तँ नहि ल' गेलैक ? कोन ठेकान ! यौनपिपासुसभक लेल एहन अबलासभ गरम सेकुवा आ सोनक चिरइ होइत छैक । मन खिन्न आ भारी भ' गेल । सोचए लगलहुँ जे हमरा ओकरा पूछए चाहैत छल । पूछि लेलासँ की बिगड़ि जइतैक ? किछु करए सकितिऐक तँ कमसँकम समयपर तँ होइतैक । फेर राजेशजीक बात मोन पड़ि गेल । भावनामे नहि बहक चाही आ हम अपन डेग तरकारी बजारदिस बढ़ा लेलहुँ ।

ओहि दिन हम साग किनैत काल बेसी मोलमोल्है नहि कएने रही । उनटपुनट सेहो नहि । पालक देखलिऐक आ जे कहलक से दैत सागक झोरा लटकओने घूरि गेल रही । चौकपर फेर नजरि अनायासे ओही देवालपर ठमकि गेल । ओ ओहिना सिन्दूर थोपने बैसलि छलि । भीतरे–भीतर प्रसन्नता भेल छल । बेसाहल चिन्ताक बोझ जेना उतरि गेल होए । लागल, कमसँकम

ओकर कोनो ठौर तँ छैक ! रातिमे कतहु रहैति तँ अछि !! ठौर छैक तँ खाइतो–पिबैति अवस्से हएति !!!

घर अएलहुँ तँ राजेशजी एकगोटेक सङ प्रतीक्षा करैत रहथि । नमस्कारपाती भेल । राजेशजीकेभ देखि मन खिल गेल रहए । छुट्टीक दिन हमर सङ इएह दैत छथि । हमर पुरान मित्र छथि । बड्ड रसिक लोक । गम्भीर हास्यमे नीक दक्षता छन्हि । हिनक ठिठोलीमे भरल दार्शनिकता हमरा मोहि लैत अछि । खूब बतिआइत छी हमसभ । अपना पहुँचक विषयसभपर भरिपोख बहस क' लैत छी आ गम्भीर विषयसभपर राजेशजीक वस्तुपरक विश्लेषणसँ ज्ञानक सङहिं मनोरंजनो भ' जाइत अछि । ... हम पालक राखि सोझे राजेशजी लग अएलहुँ तँ ओ सङहि आएल व्यक्तिसँ परिचय करबैत बजलाह — æ पहिने परिचय करु ! ई छथि स.ई. राम दयाल यादव, एहि टोलक पुलिसक इनचार्ज !! अपनेसभक दिसक छथि । आब सुरक्षाक विषयलेल निश्चिन्ते बुझू । जखन देआदे थनेदार तँ डर कथिक ? आ ताहूमे देआदी झगड़ाक सम्भावना शून्य तँ दुश्मन पड़एले रहताह ने !"

æबड्ड खुशी भेल । वाह !" — हम अपन हर्ष रोकि नहि सकलहुँ — æअबैत रहब । कतेक नीक लगैत अछि । ... हम वन विभागमे छी । अही ठामक थनदार छी तँ सहयोगक बेगरता कखनो पड़ि सकैत अछि । ... मुदा अहाँसभ छी घुमन्तू तैँ अपन फोन द' दिअ ! ... आ हमरो राखि लिअ ।"

æजी अवश्य !" - सब–इन्सपेक्टर साहेबक आँखि चमकिरहल छल — æजी अपन नम्बर कहलजाय ।" ओ मोबाइल निकालि बजलाह । हम अपन नम्बर कहलिअन्हि आ ओ मीसकाल कएलन्हि । दूनूगोटे सेभ कएलहुँ । ताबत सृजना चाय ल' अनने छलीह । हुनकोसँ परिचयपात भेलनि । नमस्कार क' ओहो बैसि गेलीह । हालछेम, गामघरक चर्चा आहेमाहे चलैत रहल । मुदा, रहि-रहि क' हमरा उएह मौगीक याद अबैत रहए । सोचैत रही जे सृजना उठैथि तँ चर्च करी । तँ जखन भानसक ध्यान अएलापर ओ उठलीह तँ हम बाजि उठलहुँ — æबाइ द वे, एकटा बात अहाँक ध्यानपर राखि दैत छी !"

æजी, कहलजाओ ने !" — हुनका बुझएलन्हि जे ओ कतेक महत्वपूर्ण छथि ।

æएहि चौकपर एकटा मौगीकेँ हमरासभ देखैत रहैत छिऐक । प्रायः अपनेसभक दिसक अछि । भोरेसँ रातिधरि एकहि ठाम बैसलि रहैति अछि । कखनो स्थान फेरने नहि देखैत छिऐक । उएह सलवारकुर्ती मुदा मोटगर सिन्दूर सभ दिन ताजा रहैत छैक । आँखिमे काजर सेहो । "

æजी हम जनैत छिऐक ओकरा ! ... देवालपर बैसलि रहैति अछि । पुरूब मुहेँ सएह ने ? " — ओ अपन पुलिसिया स्कील बघारलन्हि ।

æके अछि ओ ? " — हमर जिज्ञासा बढ़ल । राजेशजी अस्वभाविक रुपसँ चुप्प रहथि ।

æहमरा लगैत अछि, ओ मानसिक रुपसँ बीमार अछि । पूछताछ कएने रहिऐक । किछु बजिते नहि अछि । सभ बातमे चुप्पी । ... हम जहिआ एतए ज्वाइन कएलहुँ, छौंड़ासभ पकड़िकए अनने रहए । कहैत रहए जे ओहि दिवालपर भरि दिन चुपचाप बैसलि रहैति अछि । अबेर राति फेर गायब भ' जाइत अछि आ सबेरे ९ बजेक बाद फेर ओत्तहिं ।" — यादव रिपोर्टक अन्दाजमे कहलन्हि ।

æकी पता लगएबैक ? किछु बाजए तखन ने ! ... खाना देलकैक छौंडाÞसभ तँ हबड़हबड़ खा' लेलकि आ हाथ धो क' फेर चुपचाप बैसि रहलि । हम कहलिऐक जे भिनसरमे छोड़ि दिअहीक । ... खबरदार जे कोनो शिकायत सुनए पड़ए ! " — सब–इन्सपेक्टर अपनाकेँ नीक प्रमाणित करैत कहलन्हि ।

æहूँ !" — हम नमहर साँस तनैत कहलिऐक ।

æजी ! ... छोड़लजाय । एहन बहुत छैक । कतेकक पाछाँ पड़ब ? ... माइक जीरोजीरो फोर ... । " — कहैत ओ बाहर निकलि गेलाह, वाकीटाकीमे घरघराइत केओ किछु कहैत रहैक । कनेक कालक बाद घुरलाह तँ कहलन्हि — æहमरा तँ दौड़ि जाय पड़ल । नमस्कार । ... फेर कहिओ आएब ।" आ ओ तेजीसँ निकलि गेलाह ।

æभेल कि ने ! ... अहाँकेँ कोन सूरपर चढ़ल अछि ओ मौगी, से नहि जानि ! ने चिन्हा ने जानी आ तैयो एतेक किआ

परेशानी !! ... नहि बुझि सकलहुँ ।”— राजेशजी तमसाइत बजलाह —æपढ़ाकए चलि गेल ने । की बुझने हएत ओ !”

æ की बूझत ? कोनो अनर्गल बात तँ छैक नहि । कहए ई चाहने रहिऐक जे ओ किनसाइत किछु पता लगबैत ! ओकरो जानकारी तँ छैक । आखिर ओ मौगी समस्यामे अछि से बूझएमे तँ आएल !!” — हम राजेशजीकेँ समझबैत कहलिअन्हि —æओ भूखल रहैति अछि । असहाय अछि !”

æ अहाँक भावना हम बूझि सकैत छी मुदा एहन तँ कतेको अछि । अहाँ सभकलेल करए सकबै ? ओ मौगी अछि तँ बेशी ध्यान चलि गेल, सएह ने !” — राजेशजी नहि जानि कोन अर्थमे बुझने रहथि, तथापि हुनक हमराप्रतिक सकारात्मक आ सहयोगी दृष्टिकोणपर शंका नहि भेल । ओ अपना हिसाबेँ हमरा भसिआएसँ बचबए चाहैत छलाह । धमकबैत कहलन्हि — æभौजीकेँ कहि दैत छिअन्हि !” हम अपन हाथक इशारासँ मना करैत उठि गेलहुँ । ओहो संकेत बुझैत साँझमे फेरो आएब कहैत उठि गेलाह । जीमे दम आएल । सृजनाकेँ ओना सुनओनाइ कहुना नीक नहि होइत । चाहे शिक्षित होए वा निरक्षर आखिर माउगि तँ माउगे होइत अछि ने ! यदि कहबो करबन्हि तँ हमहीं किए नहि कहबन्हि । हम अपन माथ झटकलहुँ आ बाथरुममे स्नानहेतु पैसि गेलहुँ ।

❋ ❋ ❋ ❋

रबी एहि चौकक दादा अछि । सभ छौंड़ासभ ओकरे पाछाँ रहैत छैक । अछि तँ ददे ! दादागिरीक सभ गुण छैक आ तैँ सभ किछु करैत अछि !! मुदा, अछि रचनात्मक । एहि टोलक लोकक सहयोगी । बिआह–दान आ सभ सांस्कृतिक, वैकासिक तथा सार्वजनिक काजमे बेस सक्रिय रहैत अछि । टोलक स्वीरेज, जल–प्रवन्धसँ ल' क' सड़क विभाग सड़क बनबैत अछि तखनो ओ हाजिर रहैत अछि । इएह कारण छैक जे सभ ओकरा पसिन करैत छैक । हमरो ओ नीक लगैत अछि । एहन दादा टोलक लेल नीके होइत छैक । ... ओकर नियमसभ छैक । टोलमे केओ चोरी-चकारी, छेड़-छिनरिपन, बेईमानी नहि करत आदि–आदि । किछु भेलैक आ पता लागि गेलैक तँ ओ सम्बन्धित लोकसभकेँ बैसाओत आ दण्ड–जुरमाना करत । निर्णय ओकरे होइत छैक मुदा करैत अछि ओ सम्भव न्याय । हँ, ओ दोकानदारसभसँ महीनबारी लैत अछि । चुनावमे जकरा कहतैक तकरे भोट दिऔक से ओकर आग्रह रहैत छैक । लोक मानबो करैत छैक । ओना जे पहिनहिंसँ कोनो पार्टी धएने रहैत अछि से अपना मने भोट खसाबो मुदा टोलमे ओकरे प्रचार चलतैक !

रबी हमरा बहुत आदर करैत अछि । कारण हमरा नहि बूझल अछि । भ' सकैत अछि एहि टोलक पुरान बासी भेलाक कारणेँ एना करैत हुअए । २५ बरस पहिने हम एहि टोलमे अएलहुँ तँ ओ बच्चे रहए । ओहि दिन दोकानपर गेल रही तँ रबी भेँट भ'

गेल । नमस्कार कएलक । हमहूँ हालचाल पुछलिऐक । ओ नीक कहैत दुनू हाथ जोड़ने ठाढ़े रहल । आगाँ की पुछिऔक से फुड़ाएल नहि । मुँहसँ बहरा गेल —ॠरबी, एकटा बात पुछिअह ?”

ॠजी, कहलजाय ने !” — ओ सावधानीसँ आग्रह कएलक ।

ॠ चौकपर ओ जे मौगी बैसल छैक से के छैक ? सभ दिन अहिना चुपचाप बैसलि रहैति अछि !”

ॠहमहुँ अहिना देखैत छिऐक । ककरोसँ किछु बजैति नहि अछि । केओ किछु खाएलेल दैत छैक तँ झट्ट द' ल' लैति अछि बस ! ... शुरुमे लागल जे एकरा किछु सहयोगक आवश्यकता छैक । घुमाफिरा क' पुछलिऐक, मुदा कोनो उत्तर नहि देलकि तँ छोड़ि देलिऐक । रातिमे अबेरतक एतए रहैति अछि । पता नहि फेर कतए चलि जाइत अछि । एहि टोलमे तँ ओकर घर वा डेरा नहि छैक ! प्रायः मति खराब छैक वा केओ असगर छोड़ि देने छैक ।” — ओ अपन अन्दाज कहलक — ॠएहि टोलक ओकरा केओ किछु क' नहि सकैत अछि । दोसर ठामक बात नहि जानी । ... हँ, एक दिन पुलिससभ पकड़ि क' ल' गेल रहैक । संगीसभ सुनओने रहए । कहाँदोन ओ कोनो प्रतिकार नहि कएलकि । तैँ हमहूँसभ अन्ठा देलिऐक ।”

ॠहूँ... !” — हम कनेक गम्भीर भ' गेल रही आ चोट्टहिं घुरि गेल रही ।

□ ❋ ❋ ❋

❋

एहि बीचमे नहि जानि कतेक महीना भ' गेलैक । हम ओकर चर्च कएनाइ छोड़ि देलहुँ । हँ, जाइत-अबैत ओकरा देखिऐक जरूर । ओकराबारेमे जानएक उत्कण्ठा मेटा नेने रही । ओहि दिन आफिस जाइत काल चौकपर पहुँचलहुँ तँ चौकपर भीड़ लागल रहैक । उत्सुकता जागल । मोटरसाइकल ठाढ़ कए भीड़दिस बढ़लहुँ । उएह मौगी घामेपसीने नहाएल चिचिआइत रहए । कखनो केश तँ कखनो अपने लत्ता नोचए । कखनो लोककेँ देखि भोकासी पारि कए घेओना पसारए । आँखि कहैक जेना ओकर सभकिछु केओ छिनि नेने होइक । निरीह आखियेँ ओ लोककेँ देखए आ फफकि-फफकि कानए । आ फेर पहिनहिं जकाँ कखनो केश तँ कखनो अपने लत्ता नोचए । साँस भाथी जकाँ ऊपर-नीचा होइक । ... हम सुन्न भ' गेल रही । कोलाहल रहैक । के की कहैक जानि-बुझि नहि सकलिऐक । ... ओ आब खूब चिकरए लागलि छलि । ओकर भाषा नीक छलैक । लागल निश्चितेँ पढ़लि-लिखलि अछि । ओ जोर-जोरसँ चिकरैति रहए – " हँ, हम चौकपरक मौगी छी ! ... अही योग्य !! ... सभ भोगू ! ... तागत देखाऊ !! ... चौकपरक मौगीपर ... जे निरीह अछि ... आ ने जकर केओ रक्षक छैक ... तकरापर जोरजुलुम करू, पुरुषत्व देखाऊ ! ... बाप रे ! ... हम आब चौकपर मौगी छी !! "

लागल जेना खसि पड़ब । स.ई. यादवजीक सेहो बदली भ' गेल छलन्हि । ककरा कहिऔक ? आन दिन आनन-फाननमे पुलिस पहुँच जाइत छल । आइ पुलिससभ कतहुँ देखाइ नहि पड़ैत अछि, जेना ओ सभ अपने डेराएल नुकाएल होए । आफिस नहि जा सकलहुँ । कहुना डेरा अएलहुँ आ ओछाओनपर पसरि गेलहुँ । लागल, हमहुँ अपराधी छी । ओकरा पूछने रहितिऐक आ जौँ ओ बतओने रहैति तँ जरुर कोनो ऊपाय निकलल रहितैक । आइ एहन स्थिति नहि अबितैक ! 'लोक की कहत ?' – एहि डरेँ नहि डेरइतहुँ तँ एना नहि होइतैक । हम अपराधी छी ! चारूभरक लोक अपराधी अछि !! आओरक छोड़ू, हम ठीके अपराधी छी !!!